## अध्याय तीसवाँ

**॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥**

"मन ही मन सिद्धनाथजी का ध्यान करके उनके प्रेम से मेरा तन, मन भर जाए। जो कुछ मेरे पास है, वह सब कुछ मैं उनके चरणों में अर्पण कर रहा हूँ; आप की कृपाप्राप्ति की मनोकामना करने वाला यह आपका ही सेवक है।"
सतगुरुनाथजी, आप का स्वरूप देखने (समझने) लगते हैं, तब नाम तथा रूप से भरा यह जगत नष्ट हो जाता है और सारी मनोकामनाएँ तथा इरादे आत्माकार हो जाते हैं। जिसने ब्रह्मसुख का अनुभव किया हो ऐसा ध्याता हमेशा ध्यान ही को सुख समझता है और ध्यान से प्राप्त अनुभव से स्वयं आनंद रूप हो जाता है। जो ध्याता, किसी वस्तु का ध्यान करते समय उस वस्तु से एकरूप नहीं होता तथा व्दैत (यहाँ ध्याता और ध्यान ये दोनों भी विभिन्न होने के कारण व्दैत रह गया) में ही रहकर सुख का अनुभव करते हुए भवभय से मुक्त होता होगा, तो ऐसे साधक के बारे में मैं कुछ भी नहीं बोलूँगा। जो स्वयं ब्रह्म से एकरूप होता है, उसी का भवभय पूर्ण रूप से नष्ट होता है, क्योंकि अव्दैतभाव प्रकट हुए बिना भवभय कैसे नष्ट होगा? ध्याता जिसका ध्यान करने लगता है, उसी से वह स्वयं एकरूप होता है; उस समय केवल चैतन्य मात्र रह जाता है या महसूस होता है। इस प्रकार प्रतिदिन अध्ययन करने से आत्मज्ञान दृढ़ होता है और चारो ओर स्वरूप के सिवाय अन्य कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता (चारो ओर केवल ब्रह्म का ही अनुभव होता है)। यह ज्ञान गुरुकृपा से प्राप्त होता है तथा जो प्रतिदिन श्रवण, मनन और एकाग्रता से चिंतन करता है वही गुरु का कृपापात्र होता है। अब एक मनोहर कहानी सुनिए।

कुरंदकोप्प नाम के एक गाँव में बसप्पा नाम का एक सज्जन रहता था। उसकी पत्नी का नाम दानव्वा था; जब वह गर्भवती होकर नौ महीनें पूरे हुए, तब बसप्पा को अति आनंद हुआ। दानव्वा पहली बार गर्भवती होने के कारण उसे विशेष हर्ष हुआ था; परंतु जब नौ महिने पूर्ण हुए तब गर्भ गर्भाशय में ही गल गया। दूसरी बार फिर से वह गर्भवती हुई, परंतु नौ महीने पूरे होते ही वह प्रसूत ही नहीं हुई और फिर एकबार पहले जैसा गर्भ गल गया। तीसरी बार जब वह गर्भवती हुई तब अचानक एक महिला उसके घर पधारी और दानव्वा की

स्थिति जान लेने के पश्चात उसे बोली, "दो बार गर्भवती होकर नौ महीने पूर्ण होने के पश्चात प्रसूत न होना निश्चित ही निगूढ़ है। इसलिए मैं जैसा कहती हूँ वैसा आप दोनों करो। हुबली शहर में स्थित सिद्धाश्रम में सिद्धारूढ़ स्वामीजी नाम का एक महात्मा है, वे हमेशा भक्तों के संकटों का निवारण करने में ही व्यस्त रहते हैं। भक्तों को संकटों से मुक्त करके वे उनका कल्याण करते हैं। आप दोनों मिलकर उनके पास जाकर उन से प्रार्थना कीजिए और उन्हें सब कुछ भली-भाँति बताईए। वे अत्यंत दयालु सतगुरुजी हैं तथा भक्तों पर अपार करुणा करते हैं, वे तो जगद्गुरु ही हैं। आप अपनी समस्या उनको बयान करके पुत्रप्राप्ति के लिए उन से प्रार्थना कीजिए, वे तुरंत ही योग्य उपाय अवश्य करेंगे।" उसपर दानव्वा ने उसे कहा, "आप हमें बता दीजिए की पुत्र देने के लिए वे हम से क्या लेंगे। हम बहुत धनवान हैं और वे जो चाहे वह उन्हें देने के काबिल हैं।" वह महिला बोली, "ना ना! वे धनधान्य जैसी कोई वस्तु नहीं माँगते। उन्हें केवल आप का निर्मल मन चाहिए। शुद्ध मन से उनकी शरण में जाने से वे माँगा हुआ सब कुछ देते हैं, दुखी लोगों का दुख निवारण करते समय वह धनवान तथा गरीबों में कोई भेद नहीं करते।" यह सुनकर दानव्वा मन ही मन अति आनंदित हुई और बोली की अच्छा हुआ जो सतगुरुनाथजी हमें उद्धरने पधारे। उसने पति को सब कुछ बयान किया और बोली, "हम तत्काल सिद्धसतगुरुजी के दर्शन करने हुबली जाएँगे।" उसपर उसने सतगुरुजी को अर्पण करने हेतु फल, फूल आदि वस्तुएँ अपने साथ ली और शाम को निकलकर वे दोनों सिद्धाश्रम पधारे। आश्रम के समीप आते ही उन्होंने दोनो ओर खड़े होकर भजन करने वाले भक्त तथा उनके बीचो बीच सिद्धगुरुजी की तेजवंत मूर्ति खड़ी हुई देखी। उस दृश्य को देखते ही बसप्पा तथा दानव्वा अति आनंदित होकर दौड़ते हुए आए और उन्होंने गुरु चरणों में सिर रखकर उन्होंने प्रणाम किया। फल, फूल उनके सामने रखते हुए उत्सुक होकर वे उनके सामने खड़े हुए। उसी समय भजन समाप्त हो गया और कपूर की आरती जलाई गयी। सारे भक्त मिलकर एक ही सुर में आरती का गीत गाने लगे; सतगुरुजी की मंगलारती उतारते समय आनंद की कोई सीमा ही नहीं रही। उसपर सभी भक्तगण सतगुरुजी को साष्टांग प्रणाम करके उनकी आज्ञा लेकर अपने अपने

घर लौटे। उसपर सिद्धारूढ़जी बसप्पा की ओर मुड़कर बोले, "बताईए, किस काम से आप दोनों का यहाँ तक आना हुआ।" बसप्पा ने कहा, "हे महाप्रभु! यह मेरी पत्नी है। दो बार गर्भवती होकर नौ महिने पूरे होने के पश्चात दोनों बार गर्भ गर्भाशय में ही गल गया। अब वह तीसरी बार गर्भवती है। कम से कम अब की बारी तो उसके पुत्र हो यही मनोकामना लेकर हम दोनों आप के चरणों में शरण आये हैं, स्वामीजी हम पर कृपा कीजिए।" उसपर सोचकर सतगुरुजी मृदुता से बोले, "बसप्पा तुम सचमुच ही पुण्यवान हो। तुम्हारे घर एक महान तपस्वी का जन्म होने वाला है, परंतु उसे घरगृहस्थी का सुख तथा सांसारिक व्यवहारों में कतई रुचि न होने के कारण वह शीघ्र ही साधुओं के साथ निकल जाएगा और उसके पश्चात आकर आप को कभी भी नहीं मिलेगा।" पुत्रप्राप्ति होगी ये गुरुमहाराजजी के शब्द सुनकर वह जोड़ा आनंदित हुआ। उसपर सिद्धनाथजी ने उन्हें भोजन कराकर उनके गाँव भेज दिया।

दोनों लौटकर अपने गाँव आने के पश्चात सतगुरुजी के चिंतन में हर्षित होकर दिन बिताने लगे, तभी एक अचरच हुआ। एक रात को जब बसप्पा की पत्नी बिछाने पर सो रही थी उसे एक आश्चर्यजनक सपना आया। सपने में उसे लगा की उसे प्रसववेदनाएँ आरंभ हो गई हैं। उसपर उसने सिद्धारूढ़जी का नाम लेते ही वे सामने प्रकट हुए। कृपालु होकर उन्होंने उसकी ओर देखते ही वह प्रसूत हो गयी और एक दिव्य पुत्र का जन्म हुआ। तब सतगुरुजी ने उस बालक को उठा लिया और उसे कहा, "हे पतिव्रता स्त्री, यह सपना ही है ऐसा मत समझ। तुम्हारा पहला बच्चा मैं ले जा रहा हूँ। इस बालक का पालनपोषण साधुसंतों के हाथों से हो, इसलिए मैं इसे अन्य जगह जाकर रखने वाला हूँ। परंतु ध्यान में रहें की मैं तुम्हें और एक पुत्र दूँगा। आप दोनों किसी भी प्रकार की चिंता मत करना। हमेशा सतगुरुजी स्मरण करते रहिए, ताकि एक वर्ष के अंदर तुम्हें दूसरा पुत्र होगा।" उसके पश्चात उसे आशिर्वाद देकर सिद्धनाथजी अंतर्धान हो गए। उठकर उसने देखा तो सचमुच ही वह प्रसूत हुई थी। उसने अन्य महिलाओं को जगाया, सभी आश्चर्य से दंग होकर चारो ओर देखने लगी, परंतु बालक कहाँ है यह कोई भी न जान पाया। बालक के जन्म की वार्ता सुनकर बसप्पा दौड़ता हुआ वहाँ आया और सभी मिलकर बालक को खोजने

लगे। दानव्वा ने सपने में जो कुछ हुआ उसका विवरण देकर कहा, की गुरुदेव बालक अपने साथ ले गए। उसने जो कुछ बताया उसकी पूर्वकल्पना होने के कारण बसप्पा ने कतई व्यर्थ चिंता नहीं की। दानव्वा कुछ दिन चिंतित रही, परंतु समय के साथ उसकी चिंता भी कम हो गयी। कुछ दिनों के पश्चात वह दंपति जब सतगुरुजी के दर्शन के लिए गया, तब उन्होंने सब कुछ सतगुरुजी को बताया। तब सिद्धारूढ़जी ने कहा, "जो बालक तुम्हारे कोख से जन्मा था वह महान तपस्वी होने के कारण सत्संग प्राप्ति के लिए मैंने उसे एक पावन जगह भेज दिया है। आप को और एक पुत्र होगा, जो आप के साथ रहेगा|" सतगुरुजी की बोल सुनकर उस दंपति को अपार हर्ष हुआ। सतगुरुजी को प्रणाम करके वे दोनो अपने गाँव के लिए निकल पड़े; मार्ग में अविरत नामस्मरण करते हुए वे चल रहे थे। घर लौटकर वे आनंद से रहने लगे। कुछ दिनों के पश्चात दानव्वा फिर एकबार गर्भवती  हो गयी और नौ महीने पूरे होते ही उसने एक दिव्य बालक को जन्म दिया।

श्रोतागण, अब इस कहानी का लक्ष्यार्थ सुनिए। कुरंदकोप्प गाँव को ही शरीर समझें। बसप्पा को जीवात्मा तथा उसकी पत्नी को बुद्धि समझें। वह पुण्योदय के कारण गर्भवती हो गयी। वैराग्यकोश में ज्ञान का गर्भ ठहरा। भूतकाल के कुछ कर्मों के कारण बाधा आकर वह गर्भ गर्भकोश में ही गल गया। दूसरी  बार वर्तमानकाल ही  बाधा बनने के कारण फिर से गर्भ गल गया। तीसरी बार बुद्धि ने गर्भ धारण करने के पश्चात जीवात्मा सतगुरुनाथजी की शरण में गया और उन्हें कहा, "अब तो ज्ञान के आगमन में कोई बाधा न आए।" सतगुरुजी ने कहा, "इस बार ज्ञानोत्पत्ति हो जाएगी परंतु ज्ञान सत्संग में चला जाएगा और तुम्हें प्राप्त नहीं होगा। फिर से बुद्धि में ज्ञान का प्रकाश फैलेगा, परंतु वह अपने आप ही सुरक्षित रहेगा, जिससे तुम अनायास ही धन्य हो जाओगे।" जैसा सतगुरुजी ने कहा, बिलकुल वैसे ही हुआ। श्रोतागण, यही इस कहानी का तात्पर्य है, जिस पर आप हमेशा चिंतन कीजिए। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह तीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥